प्रस्तावना

मार्च 2020 के बाद से, कोविड-19 महामारी के प्रभाव को कम करना भारतीय रिज़र्व बैंक की सर्वोच्च नीतिगत प्राथमिकता रही है। इस विशाल संकट को देखते हुए जीवन और आजीविका की क्षति कम से कम होने देने, कमजोर लोगों को बचाने, अर्थव्यवस्था एवं वित्तीय बाजारों की रक्षा करने और आत्मविश्वास भरने के लिए की गई नीतिगत कार्रवाइयां अपने पैमाने, पहुँच और गति में अभूतपूर्व रही हैं। एक ओर जहाँ यह उम्मीद है कि वायरस के साथ संघर्षमय जीवन के दो वर्ष अब समाप्त होने वाले हैं, वहीं बढ़ता अनुकूलन और टीकाकरण हमें महामारी के बाद के एक ऐसे भविष्य की कल्पना करने की अनुमति देता है जिसमें भारतीय अर्थव्यवस्था में नई ऊर्जा भरने और इसे उच्च विकास मार्ग पर प्रक्षेपित करने की दिशा में फिर से नीतिगत स्तर पर ध्यान केंद्रित किया जा सके।

इस मिशन को पूरा करने के लिए नीतिगत हस्तक्षेपों का उचित स्वरूप क्या है? स्पष्ट है कि अर्थव्यवस्था को स्थिर करना तथा उन गहराइयों से इसे उबारना भर पर्याप्त नहीं है जहाँ यह संक्रमण की पहली लहर और उसके बाद की लहरों की आघातों से डूब गई थी। चुनौती यह है कि ऐसा एक सुचक्र प्रारंभ किया जाए जिसमें उद्यमियों हेतु नवोन्मेष व निवेश के एवं व्यवसाय के लिए अधिक पूँजी व प्रौद्योगिकी को आकर्षित करने के ज्यादा अवसर हों; और महामारी के वितरण प्रभावों के प्रबंधन की राजकोषीय गुंजाइश हो तथा इसके साथ-साथ भौतिक अवसंरचना व मानव पूँजी में सार्वजनिक निवेश का विस्तार भी होता रहे।

कोविड-19 संकट में कृषि और संबद्ध गतिविधियों, सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं, निर्यात, डिजिटलीकरण और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे कुछ क्षेत्रों की सुदृढ़ता से हमें विश्वास मिलता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था एक मजबूत वापसी कर सकती है। कुछ अन्य क्षेत्रों ने इस आपदा का उपयोग जिस तरह से पुनर्निर्माण और पुनर्विन्यास में किया उससे इस आत्मविश्वास को बढ़ावा मिलता है। इन क्षेत्रों में आएंगे संगठित कॉर्पोरेट क्षेत्र; वित्तीय क्षेत्र; स्टार्ट-अप्स; और हाल ही में, विनिर्माण क्षेत्र। हमारे आस-पास की दुनिया भी भू-राजनीतिक संघटनों व नीतिगत रणनीतियों को नई वैश्विक वास्तविकताओं के अनुसार पुनर्व्यवस्थित करके बदल रही है और इसमें वैश्वीकरण और वित्तीय एकीकरण पर पुनर्विचार भी शामिल है।

तदनुसार, मुद्रा और वित्त संबंधी इस वर्ष की रिपोर्ट की थीम "पुनरुत्थान और पुनर्निर्माण" है। छह अध्यायों में संरचित, यह रिपोर्ट महामारी से जुड़े वास्तविक अनुभव के आयामों, अनुसंधान और आँकड़ा आधारित निष्कर्षों से सामग्री लेती है और महामारी के बाद के भारत का एक विज़न और वहाँ पहुँचने का मार्ग देती है। मैं सराहना करता हूँ उस अन्वेषण भाव की जो इस रिपोर्ट को तैयार करने वाली टीम के लिए सतत प्रेरणा रही है। जैसा कि आइंस्टीन ने एक बार कहा था, ''नए प्रश्नों को पूछने और नई संभावनाओं को जन्म देने के लिए, पुरानी समस्याओं पर एक नए दृष्टिकोण से विचार करने के लिए, सृजनात्मक कल्पना की आवश्यकता होती है।"[1] आशा है कि रिपोर्ट सही प्रश्न पूछेगी और पाठकों को प्रेरित करेगी कि वे भी, इस टीम की तरह, महामारी के बाद के भारत के भविष्य की कल्पना करें।

शक्तिकांत दास
गवर्नर
29 अप्रैल 2022

[1] "भौतिकी का विकास" ("द इवॉल्यूशन ऑफ़ फ़ीजिक्स"), अल्बर्ट आइंस्टाइन और लियोपोल्ड इनफेल्ड, 1938